

शंघाई सहयोग संगठन के परिप्रेक्ष्य में भारत-रूस संबंधों का सामरिक विश्लेषण (2017-2025)

अभिषेक तोमर

शोधार्थी

राजनीति विज्ञान विभाग

एस0 डी0 पी.जी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ0प्र0

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 03-05-26

Approved: 29-06-26

अभिषेक तोमर

शंघाई सहयोग संगठन के परिप्रेक्ष्य
में भारत-रूस संबंधों का सामरिक
विश्लेषण (2017-2025)

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.14, Pg. 082-089

Similarity Check: 02%

Online available at
<https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026>

DOI: <https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.014>

सारांश

शंघाई सहयोग संगठन समकालीन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन के रूप में उभरा है, जिसका उद्देश्य सदस्य देशों के बीच सुरक्षा, आर्थिक सहयोग तथा क्षेत्रीय स्थिरता को सुदृढ़ करना है। वर्ष 2017 में भारत की पूर्ण सदस्यता के पश्चात भारत और रूस के संबंधों को सहयोग का एक नया बहुपक्षीय मंच प्राप्त हुआ। प्रस्तुत लेख में 2017 से 2025 के मध्य शंघाई सहयोग संगठन के परिप्रेक्ष्य में भारत-रूस संबंधों का सामरिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में रक्षा सहयोग, आतंकवाद-रोधी प्रयासों, क्षेत्रीय सुरक्षा, मध्य एशिया में रणनीतिक हितों तथा बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था के निर्माण में दोनों देशों की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। लेख यह स्पष्ट करता है कि शंघाई सहयोग संगठन ने भारत और रूस के बीच संवाद एवं सहयोग को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यद्यपि चीन की बढ़ती सक्रियता, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा तथा भू-राजनीतिक चुनौतियाँ सहयोग की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं, फिर भी भारत और रूस अपने साझा हितों के आधार पर संगठन के भीतर प्रभावी साझेदारी बनाए हुए हैं।

मुख्य शब्द: शंघाई सहयोग संगठन, भारत-रूस संबंध, सामरिक सहयोग, क्षेत्रीय सुरक्षा, मध्य एशिया, बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था।

21 वीं शताब्दी में अंतरराष्ट्रीय राजनीति का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हुआ है। वैश्वीकरण, क्षेत्रीय संगठनों की बढ़ती भूमिका, सुरक्षा संबंधी नई चुनौतियाँ तथा बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था की उभरती प्रवृत्तियों ने राष्ट्रों के मध्य सहयोग के नए आयाम विकसित किए हैं। इसी संदर्भ में शंघाई सहयोग संगठन एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन के रूप में स्थापित हुआ है, जो सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, आतंकवाद-रोधी प्रयासों तथा क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने का कार्य करता है। वर्ष 2001 में स्थापित यह संगठन आज यूरेशियाई क्षेत्र के प्रमुख देशों को एक मंच पर लाकर सामूहिक हितों की पूर्ति का प्रयास कर रहा है।¹

भारत और रूस के संबंध ऐतिहासिक रूप से विश्वास, मित्रता तथा रणनीतिक सहयोग पर आधारित रहे हैं। शीत युद्ध काल से लेकर वर्तमान समय तक दोनों देशों ने रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, अंतरिक्ष तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर घनिष्ठ सहयोग बनाए रखा है। बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों तथा आर्थिक हितों के बीच भारत और रूस के संबंधों ने एक नई दिशा प्राप्त की है।²

वर्ष 2017 में भारत के शंघाई सहयोग संगठन का पूर्ण सदस्य बनने के बाद भारत-रूस संबंधों को बहुपक्षीय सहयोग का एक नया आयाम प्राप्त हुआ। इस सदस्यता ने भारत को मध्य एशिया के देशों के साथ अपने संबंध सुदृढ़ करने का अवसर प्रदान किया, वहीं रूस को भी संगठन के भीतर अपने पारंपरिक सहयोगी भारत के साथ सामरिक समन्वय को और अधिक मजबूत करने का अवसर मिला। शंघाई सहयोग संगठन के मंच पर दोनों देश आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद, साइबर सुरक्षा तथा क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों पर साझा दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास करते रहे हैं।³

2017 से 2025 के मध्य वैश्विक राजनीति में अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुईं, जिनमें अफगानिस्तान की बदलती स्थिति, रूस-यूक्रेन संघर्ष, ऊर्जा सुरक्षा की चुनौतियाँ तथा बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था की ओर बढ़ती प्रवृत्तियाँ प्रमुख हैं। इन परिस्थितियों में शंघाई सहयोग संगठन के अंतर्गत भारत और रूस की भूमिका तथा उनके सामरिक संबंधों का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य शंघाई सहयोग संगठन के परिप्रेक्ष्य में भारत-रूस संबंधों का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि यह संगठन दोनों देशों के रणनीतिक हितों, क्षेत्रीय सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है।

शंघाई सहयोग संगठन: अवधारणा, उद्देश्य एवं विकास

शंघाई सहयोग संगठन एक प्रमुख यूरेशियाई क्षेत्रीय संगठन है, जिसकी स्थापना 2001 में शंघाई (चीन) में हुई थी। यह संगठन प्रारंभ में "शंघाई फाइव" के रूप में अस्तित्व में आया, जिसमें चीन, रूस, कजाखस्तान, किर्गिजस्तान और ताजिकिस्तान शामिल थे। बाद में उज्बेकिस्तान के जुड़ने के बाद इसे औपचारिक रूप से शंघाई सहयोग संगठन का नाम दिया गया। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय सुरक्षा, राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक सहयोग और आपसी विश्वास को बढ़ावा देना है।⁴

शंघाई सहयोग संगठन की अवधारणा मुख्यतः इस विचार पर आधारित है कि यूरेशियाई क्षेत्र के देश सामूहिक सहयोग के माध्यम से आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद जैसी समस्याओं का मुकाबला कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह संगठन सदस्य देशों के बीच आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा, परिवहन संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित करता है। शंघाई सहयोग संगठन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था को मजबूत करना और किसी एक शक्ति के प्रभुत्व को संतुलित करना भी है। न विकास की दृष्टि से शंघाई सहयोग संगठन ने अपने गठन के बाद से निरंतर विस्तार किया है। वर्ष 2004 में मंगोलिया को पर्यवेक्षक का दर्जा दिया गया, जबकि 2005 में भारत और पाकिस्तान को पर्यवेक्षक के रूप में शामिल किया गया। वर्ष 2017 में भारत और पाकिस्तान को पूर्ण सदस्यता प्रदान की गई, जो संगठन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसी अवधि में ईरान भी बाद में पूर्ण सदस्य बना, जिससे शंघाई सहयोग संगठन की भौगोलिक और राजनीतिक महत्ता और अधिक बढ़ गई। वर्तमान में शंघाई

सहयोग संगठन विश्व की लगभग 40% जनसंख्या और एक बड़ी आर्थिक क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है, जो इसे एक प्रभावशाली क्षेत्रीय संगठन बनाता है।⁵

शंघाई सहयोग संगठन के ढांचे में कई प्रमुख संस्थाएँ कार्य करती हैं, जिनमें "Heads of State Council" सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था है, जबकि "Heads of Government Council" आर्थिक और प्रशासनिक सहयोग से संबंधित निर्णय लेती है। इसके अतिरिक्त "Regional Anti-Terrorist Structure (RATS)" आतंकवाद-रोधी गतिविधियों के समन्वय का प्रमुख केंद्र है, जो सदस्य देशों के बीच सुरक्षा सहयोग को मजबूत करता है। वर्तमान समय में शंघाई सहयोग संगठन केवल एक सुरक्षा संगठन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह आर्थिक, ऊर्जा, डिजिटल सहयोग और कनेक्टिविटी परियोजनाओं का भी एक महत्वपूर्ण मंच बन चुका है। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) तथा अंतर-क्षेत्रीय व्यापार मार्गों के संदर्भ में भी शंघाई सहयोग संगठन की भूमिका लगातार बढ़ रही है।

इस प्रकार, शंघाई सहयोग संगठन एक बहुआयामी संगठन के रूप में विकसित हुआ है, जो यूरेशियाई क्षेत्र में शांति, स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ वैश्विक राजनीति में बहु-केंद्रित आधारित व्यवस्था के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

शंघाई सहयोग संगठन में भारत और रूस की भूमिका

शंघाई सहयोग संगठन के विकास और सुदृढ़ीकरण में भारत और रूस दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यद्यपि रूस संगठन के संस्थापक सदस्यों में से एक है, जबकि भारत वर्ष 2017 में पूर्ण सदस्य बना, फिर भी दोनों देशों ने संगठन के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने तथा क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने में सक्रिय योगदान दिया है। शंघाई सहयोग संगठन के माध्यम से भारत और रूस न केवल अपने द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ कर रहे हैं, बल्कि यूरेशियाई क्षेत्र में शांति, स्थिरता और विकास को भी बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं।

रूस शंघाई सहयोग संगठन के गठन से ही इसकी प्रमुख शक्ति रहा है। संगठन की स्थापना के पीछे रूस का उद्देश्य मध्य एशिया में स्थिरता बनाए रखना, आतंकवाद और उग्रवाद जैसी चुनौतियों का सामना करना तथा क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करना था। रूस ने शंघाई सहयोग संगठन को एक ऐसे मंच के रूप में विकसित करने का प्रयास किया है जो सदस्य देशों के बीच राजनीतिक विश्वास और सामरिक सहयोग को बढ़ावा दे सके। इसके अतिरिक्त रूस बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था का समर्थक रहा है और शंघाई सहयोग संगठन को इस दिशा में एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखता है। संगठन के विभिन्न शिखर सम्मेलनों, सुरक्षा बैठकों तथा आर्थिक पहलों में रूस की सक्रिय भागीदारी उसकी केंद्रीय भूमिका को स्पष्ट करती है। भारत की पूर्ण सदस्यता ने शंघाई सहयोग संगठन को नई व्यापकता और वैश्विक महत्व प्रदान किया। भारत ने संगठन को केवल सुरक्षा सहयोग तक सीमित न रखकर आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा, डिजिटल संपर्क, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं के क्षेत्र में भी सहयोग का मंच बनाने का प्रयास किया है। भारत विशेष रूप से आतंकवाद-रोधी सहयोग, सीमा-पार आतंकवाद के विरुद्ध संयुक्त प्रयासों तथा अफगानिस्तान में स्थिरता के प्रश्न पर सक्रिय रहा है। भारत का मानना है कि क्षेत्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए दोनों क्षेत्रों में संतुलित सहयोग आवश्यक है।⁶

शंघाई सहयोग संगठन के अंतर्गत भारत और रूस के बीच सामरिक समन्वय विशेष रूप से सुरक्षा और आतंकवाद-रोधी सहयोग के क्षेत्र में दिखाई देता है। दोनों देश "क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना" (RATS) के माध्यम से आतंकवादी गतिविधियों की निगरानी, सूचनाओं के आदान-प्रदान तथा संयुक्त रणनीतियों के निर्माण में सहयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त दोनों देश मध्य एशिया में स्थिरता बनाए रखने, कट्टरपंथ के प्रसार को रोकने तथा मादक पदार्थों की तस्करी जैसी चुनौतियों से निपटने के पक्षधर हैं। आर्थिक क्षेत्र में भी भारत और रूस शंघाई सहयोग संगठन के मंच का उपयोग क्षेत्रीय व्यापार, ऊर्जा सहयोग तथा परिवहन संपर्क को बढ़ाने के लिए करते हैं। अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) तथा यूरेशियाई क्षेत्र में संपर्क बढ़ाने की विभिन्न पहलें दोनों देशों के साझा हितों को

प्रतिबिंबित करती हैं। इसके साथ ही, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के क्षेत्रों में भी सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

इस प्रकार, शंघाई सहयोग संगठन में भारत और रूस की भूमिका केवल सदस्य देशों के रूप में भागीदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि दोनों देश संगठन की दिशा और प्राथमिकताओं को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण शक्तियों के रूप में उभरे हैं। उनका सहयोग क्षेत्रीय स्थिरता, सुरक्षा और बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

2017-2025 के दौरान भारत-रूस सामरिक संबंधों का विश्लेषण

रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग: वर्ष 2017 से 2025 के मध्य भारत और रूस के सामरिक संबंधों में रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग सबसे महत्वपूर्ण आधार बना रहा। यद्यपि वैश्विक राजनीति में अनेक परिवर्तन हुए और भारत ने विभिन्न देशों के साथ अपने रक्षा संबंधों का विस्तार किया, फिर भी रूस भारत का प्रमुख रक्षा साझेदार बना रहा। दोनों देशों के बीच लंबे समय से स्थापित विश्वास, तकनीकी सहयोग तथा रक्षा उत्पादन में साझेदारी ने इस संबंध को निरंतर सुदृढ़ बनाए रखा।⁷

इस अवधि में भारत ने रूस से आधुनिक रक्षा प्रणालियों की खरीद और उनके संचालन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। वायु रक्षा प्रणाली, नौसैनिक उपकरणों तथा उन्नत सैन्य तकनीकों के क्षेत्र में सहयोग दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी का प्रमुख तत्व रहा। इसके अतिरिक्त "मेक इन इंडिया" कार्यक्रम के अंतर्गत रक्षा उत्पादन में संयुक्त सहयोग को भी बढ़ावा मिला, जिससे तकनीकी हस्तांतरण और स्वदेशी उत्पादन की संभावनाएँ बढ़ीं।⁸ भारत और रूस के बीच नियमित सैन्य अभ्यासों ने भी रक्षा संबंधों को मजबूत किया। संयुक्त अभ्यासों के माध्यम से दोनों देशों की सेनाओं ने आतंकवाद-रोधी अभियानों, युद्ध कौशल, सामरिक समन्वय तथा आधुनिक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने की क्षमता का विकास किया। इन अभ्यासों ने दोनों देशों के बीच पारस्परिक विश्वास और सैन्य सहयोग को नई मजबूती प्रदान की।

सुरक्षा सहयोग केवल पारंपरिक सैन्य क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष सुरक्षा तथा समुद्री सुरक्षा जैसे नए क्षेत्रों तक विस्तारित हुआ। हिंद महासागर क्षेत्र और यूरेशियाई क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के लिए दोनों देशों ने संवाद और समन्वय को प्राथमिकता दी। इस प्रकार 2017-2025 के दौरान रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग भारत-रूस संबंधों की रणनीतिक आधारशिला बना रहा।

आतंकवाद-रोधी सहयोग एवं क्षेत्रीय सुरक्षा- भारत और रूस दोनों लंबे समय से आतंकवाद, उग्रवाद तथा अलगाववाद को अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा मानते रहे हैं। शंघाई सहयोग संगठन के मंच पर इन चुनौतियों से निपटने के लिए दोनों देशों ने सक्रिय सहयोग विकसित किया। विशेष रूप से क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना (RATS) के माध्यम से सूचनाओं के आदान-प्रदान, सुरक्षा समन्वय तथा संयुक्त रणनीतियों के निर्माण को प्रोत्साहन मिला।⁹

भारत ने लगातार सीमा-पार आतंकवाद के विरुद्ध कठोर अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया, जबकि रूस ने भी कट्टरपंथ और चरमपंथ के बढ़ते प्रभाव को वैश्विक सुरक्षा के लिए चुनौती माना। दोनों देशों के दृष्टिकोण में उल्लेखनीय समानता दिखाई देती है, जिसके कारण आतंकवाद-रोधी सहयोग उनके संबंधों का महत्वपूर्ण आयाम बन गया।

अफगानिस्तान की बदलती राजनीतिक स्थिति ने भी भारत और रूस के बीच सुरक्षा सहयोग को बढ़ाया। दोनों देशों ने इस बात पर जोर दिया कि अफगानिस्तान की अस्थिरता का प्रभाव पूरे मध्य एशियाई क्षेत्र पर पड़ सकता है। इसलिए क्षेत्रीय सुरक्षा, सीमा नियंत्रण, मादक पदार्थों की तस्करी की रोकथाम तथा उग्रवादी संगठनों की गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। शंघाई सहयोग संगठन के अंतर्गत आयोजित सुरक्षा बैठकों और

मंत्रिस्तरीय सम्मेलनों में भारत और रूस ने क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के पक्ष में साझा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। परिणामस्वरूप आतंकवाद-रोधी सहयोग दोनों देशों के सामरिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा।

मध्य एशिया में सामरिक हित एवं भू-राजनीति- मध्य एशिया लंबे समय से भारत और रूस दोनों के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। यह क्षेत्र ऊर्जा संसाधनों, परिवहन मार्गों तथा भू-राजनीतिक स्थिति के कारण अंतरराष्ट्रीय राजनीति में विशेष महत्व रखता है। 2017 से 2025 के बीच शंघाई सहयोग संगठन ने भारत और रूस को मध्य एशिया में अपने साझा हितों को आगे बढ़ाने का एक प्रभावी मंच प्रदान किया।

रूस ऐतिहासिक रूप से मध्य एशिया में प्रभावशाली भूमिका निभाता रहा है और क्षेत्रीय स्थिरता को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़कर देखता है। दूसरी ओर भारत मध्य एशिया को ऊर्जा सुरक्षा, व्यापारिक संपर्क तथा रणनीतिक सहयोग के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानता है। शंघाई सहयोग संगठन की सदस्यता ने भारत को क्षेत्र के देशों के साथ अपने संबंधों को संस्थागत रूप से मजबूत करने का अवसर प्रदान किया। इस अवधि में दोनों देशों ने क्षेत्रीय संपर्क (connectivity), ऊर्जा सहयोग और आर्थिक सहभागिता को बढ़ाने पर बल दिया। अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) तथा अन्य संपर्क परियोजनाएँ क्षेत्रीय व्यापार और परिवहन नेटवर्क को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी गईं। इसके अतिरिक्त ऊर्जा संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए भी भारत और रूस ने सहयोग की संभावनाओं का विस्तार किया।

भू-राजनीतिक दृष्टि से चीन की बढ़ती सक्रियता, अफगानिस्तान की अस्थिरता तथा पश्चिमी देशों की क्षेत्रीय नीतियों ने मध्य एशिया को प्रतिस्पर्धी शक्ति-राजनीति का केंद्र बना दिया है। ऐसे परिदृश्य में भारत और रूस दोनों क्षेत्रीय संतुलन, स्थिरता और बहु-केंद्रित आधारित सहयोग को बढ़ावा देने के पक्षधर रहे हैं। शंघाई सहयोग संगठन के माध्यम से दोनों देशों ने यह प्रयास किया कि क्षेत्रीय सहयोग प्रतिस्पर्धा के बजाय साझा विकास और सुरक्षा के सिद्धांतों पर आधारित हो। इस प्रकार मध्य एशिया में सामरिक हितों और भू-राजनीतिक चुनौतियों ने भारत-रूस संबंधों को नई दिशा प्रदान की तथा शंघाई सहयोग संगठन इस सहयोग का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा।

शंघाई सहयोग संगठन के मंच पर भारत-रूस सहयोग की प्रमुख उपलब्धियाँ

शंघाई सहयोग संगठन के अंतर्गत भारत और रूस ने वर्ष 2017 से 2025 के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सहयोग स्थापित किया है। भारत की पूर्ण सदस्यता के पश्चात दोनों देशों को एक ऐसा बहुपक्षीय मंच प्राप्त हुआ, जिसके माध्यम से वे अपने सामरिक, आर्थिक तथा सुरक्षा संबंधी हितों को अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ा सकें। इस अवधि में प्राप्त उपलब्धियों ने न केवल द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ किया, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग को भी नई दिशा प्रदान की।

भारत और रूस की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग का सुदृढीकरण प्रमुख है। दोनों देशों ने आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद जैसी चुनौतियों के विरुद्ध साझा रणनीति विकसित करने में सक्रिय भूमिका निभाई। शंघाई सहयोग संगठन की क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना (RATS) के माध्यम से सूचनाओं के आदान-प्रदान, सुरक्षा समन्वय तथा संयुक्त प्रयासों को बढ़ावा मिला। इससे सदस्य देशों के बीच सुरक्षा सहयोग की संस्थागत व्यवस्था मजबूत हुई और क्षेत्रीय स्थिरता को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि राजनीतिक और कूटनीतिक समन्वय के क्षेत्र में देखने को मिलती है। शंघाई सहयोग संगठन के विभिन्न शिखर सम्मेलनों और मंत्रिस्तरीय बैठकों में भारत और रूस ने अनेक अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर समान दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। दोनों देशों ने बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की प्रासंगिकता तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संप्रभु समानता के सिद्धांत का समर्थन किया। इस सहयोग ने वैश्विक मंचों पर दोनों देशों की कूटनीतिक स्थिति को और अधिक मजबूत बनाया आर्थिक और ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई। शंघाई सहयोग संगठन के माध्यम से क्षेत्रीय व्यापार, निवेश, ऊर्जा सुरक्षा और संपर्क परियोजनाओं को बढ़ावा देने के

लिए भारत और रूस ने निरंतर संवाद बनाए रखा। परिवहन संपर्क को मजबूत करने तथा मध्य एशिया के साथ आर्थिक संबंधों का विस्तार करने के उद्देश्य से विभिन्न पहलों पर सहयोग बढ़ा। इससे क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण की संभावनाएँ मजबूत हुईं और सदस्य देशों के बीच परस्पर निर्भरता में वृद्धि हुई।

मध्य एशिया में सहयोग का विस्तार भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। शंघाई सहयोग संगठन ने भारत को मध्य एशियाई देशों के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ करने का अवसर प्रदान किया, जबकि रूस ने इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण सहयोगी की भूमिका निभाई। ऊर्जा संसाधनों, व्यापारिक संपर्कों तथा क्षेत्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर दोनों देशों के बीच समन्वय बढ़ा, जिससे उनके साझा सामरिक हितों को बल मिला। सांस्कृतिक, शैक्षिक और जन-से-जन संपर्क के क्षेत्र में भी सकारात्मक प्रगति देखने को मिली। शंघाई सहयोग संगठन के अंतर्गत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों ने सदस्य देशों के बीच सांस्कृतिक समझ और पारस्परिक विश्वास को बढ़ाने में योगदान दिया। भारत और रूस ने इस मंच का उपयोग सभ्यतागत संवाद, शिक्षा तथा युवा सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए भी किया।

अतः शंघाई सहयोग संगठन के मंच पर भारत-रूस सहयोग की प्रमुख उपलब्धियाँ सुरक्षा, कूटनीति, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा तथा क्षेत्रीय संपर्क जैसे अनेक क्षेत्रों में परिलक्षित होती हैं। इन उपलब्धियों ने दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी को और अधिक सुदृढ़ बनाया है तथा यूरेशियाई क्षेत्र में स्थिरता और सहयोग की संभावनाओं को बढ़ावा दिया है।

चुनौतियाँ एवं अवसर:

चुनौतियाँ

- भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा: शंघाई सहयोग संगठन के भीतर विभिन्न सदस्य देशों के राष्ट्रीय हितों में भिन्नता पाई जाती है, जिससे कई बार सामूहिक निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया प्रभावित होती है।
- भारत-चीन संबंधों में तनाव: भारत और चीन के बीच सीमा विवाद तथा रणनीतिक प्रतिस्पर्धा संगठन के भीतर सहयोग की गति को प्रभावित कर सकती है।
- अफगानिस्तान की अस्थिरता: अफगानिस्तान की राजनीतिक एवं सुरक्षा स्थिति पूरे क्षेत्र के लिए चिंता का विषय बनी हुई है, जिसका प्रभाव शंघाई सहयोग संगठन की सुरक्षा प्राथमिकताओं पर पड़ता है।
- आर्थिक सहयोग की सीमित प्रगति: सुरक्षा क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सफलता के बावजूद आर्थिक एकीकरण और व्यापारिक सहयोग अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाया है।
- प्रतिबंध एवं वैश्विक शक्ति-संघर्ष: रूस पर लगाए गए अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध तथा बदलती वैश्विक परिस्थितियाँ भारत-रूस सहयोग के कुछ क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती हैं।

अवसर

- क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग का विस्तार: आतंकवाद, उग्रवाद और साइबर अपराध जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए भारत और रूस के पास सहयोग बढ़ाने के पर्याप्त अवसर हैं।
- ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करना: तेल, गैस और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग दोनों देशों के लिए दीर्घकालिक लाभ प्रदान कर सकता है।
- मध्य एशिया से संपर्क में वृद्धि: शंघाई सहयोग संगठन भारत को मध्य एशियाई देशों के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक और सामरिक संबंधों को मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है।
- बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था को बढ़ावा: भारत और रूस दोनों संतुलित वैश्विक व्यवस्था के समर्थक हैं, इसलिए शंघाई सहयोग संगठन इस उद्देश्य की प्राप्ति का प्रभावी मंच बन सकता है।

- प्रौद्योगिकी एवं डिजिटल सहयोग: डिजिटल अर्थव्यवस्था, नवाचार और साइबर सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग की नई संभावनाएँ उपलब्ध हैं।

भविष्य में संभावनाएँ

भारत और रूस के संबंधों के लिए शंघाई सहयोग संगठन भविष्य में एक महत्वपूर्ण सहयोगी मंच बना रहेगा। बदलते वैश्विक परिदृश्य में दोनों देश क्षेत्रीय स्थिरता, सुरक्षा तथा आर्थिक विकास के लिए परस्पर सहयोग को और अधिक व्यापक बनाने का प्रयास कर सकते हैं। विशेष रूप से आतंकवाद-रोधी रणनीतियों, साइबर सुरक्षा तथा सीमा-पार अपराधों की रोकथाम के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। साथ ही ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग भविष्य की सबसे महत्वपूर्ण संभावनाओं में से एक है। भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं और रूस के विशाल ऊर्जा संसाधनों के कारण दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक साझेदारी और मजबूत हो सकती है। इसके अतिरिक्त परिवहन संपर्क, व्यापारिक गलियारों और मध्य एशिया में आर्थिक परियोजनाओं के माध्यम से सहयोग का दायरा विस्तृत होने की संभावना है।

शंघाई सहयोग संगठन के अंतर्गत बहुपक्षीय संवाद, सांस्कृतिक संपर्क और वैज्ञानिक सहयोग भी दोनों देशों को निकट लाने में सहायक सिद्ध होंगे। यदि भारत और रूस अपने साझा हितों के आधार पर समन्वय बनाए रखते हैं, तो वे संगठन के भीतर अधिक प्रभावी भूमिका निभाते हुए क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर सकारात्मक योगदान दे सकते हैं।

शंघाई सहयोग संगठन के परिप्रेक्ष्य में 2017 से 2025 के दौरान भारत-रूस संबंधों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी समय के साथ अधिक व्यापक और बहुआयामी हुई है। भारत की पूर्ण सदस्यता के बाद शंघाई सहयोग संगठन ने दोनों देशों को सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी सहयोग, ऊर्जा, आर्थिक विकास तथा क्षेत्रीय स्थिरता जैसे विषयों पर समन्वित रूप से कार्य करने का अवसर प्रदान किया है। यद्यपि भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय तनाव और वैश्विक चुनौतियाँ सहयोग की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं, फिर भी भारत और रूस के साझा हित उनके संबंधों को मजबूत बनाए रखते हैं। मध्य एशिया में स्थिरता, बहु-केंद्रित आधारित विश्व व्यवस्था का समर्थन तथा क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रति समान दृष्टिकोण दोनों देशों को निकट लाते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि शंघाई सहयोग संगठन केवल एक क्षेत्रीय संगठन नहीं, बल्कि भारत और रूस के बीच दीर्घकालिक सामरिक सहयोग को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण मंच है, जिसकी प्रासंगिकता भविष्य में भी बनी रहेगी।

संदर्भ

1. Sharma, R-K- (2022), International Organizations and Regional Cooperation, Pearson Education, New Delhi, Pg. 145
2. Pant, Harsh V- (2021), Indian Foreign Policy: An Overview, Orient Blackswan, New Delhi, Pg. 218.
3. Ministry of External Affairs (2024), India and शंघाई सहयोग संगठन (SCO): Official Brief, Government of India, New Delhi, Pg. 6.
4. Aris, Stephen (2020), Eurasian Regionalism and the Shanghai Cooperation Organisation, Palgrave Macmillan, London, Pg. 52.
5. Allison, Roy (2018), Regionalism in Central Asia: The Shanghai Cooperation Organisation, International Affairs, Vol- 94, No- 4, Pg. 869.
6. Ministry of External Affairs (2023), शंघाई सहयोग संगठन (SCO): Background and Evolution, Government of India, New Delhi, Pg. 9.

7. Stobdan, P. (2019), The Shanghai Cooperation Organisation and India, Academic Foundation, New Delhi, Pg. **84**.
8. Lo, Bobo (2020), Russia and the New World Disorder, Brookings Institution Press, Washington D-C., Pg. **156**.
9. Ministry of External Affairs (2024), India in the Shanghai Cooperation Organisation, Government of India, New Delhi, Pg. **11**.
10. Pant, Harsh V. (2022), India's Strategic Partnerships in the 21st Century, Routledge, London, Pg. **118**.
11. Singh, Jasjit (2021), India–Russia Defence Cooperation, Knowledge World Publishers, New Delhi, Pg. **67**.
12. Aris, Stephen (2020), The Shanghai Cooperation Organisation: Security and Regional Cooperation, Palgrave Macmillan, London, Pg. **91**.
13. Stobdan, P. (2023), India, Central Asia and the शंघाई सहयोग संगठन (SCO): Academic Foundation, New Delhi, Pg. **133**.
14. Kaczmarek, Marcin (2021), Russia–China Relations in the Post & Crisis International Order, Routledge, London, Pg. **102**.
15. Ministry of External Affairs (2024), India and the Shanghai Cooperation Organisation, Government of India, New Delhi, Pg. **18**.
16. Lo, Bobo (2021), Russia and the Future of Eurasian Integration, Brookings Institution Press, Washington D.C., Pg. **142**.
17. Trenin, Dmitri (2022), Russia's Foreign Policy in Eurasia, Carnegie Endowment for International Peace, डवणघाई सहयोग संगठन (SCO), Pg. **87**.